MJC Sem II (1)

Jai Ram Singh
Deptt of Psychology

Foundation of Social Psychology

मूल्य और मनोवृत्ति में अन्तर

रोकिच (1973) ने मूल्य का ~~अर्थ~~ तात्पर्य सामाजिक उद्देश्य या लक्ष्य बताया है जिसको प्राप्त करना आवश्यक है। वारेन एवं कुपर ने मूल्य के सम्बन्ध में बताया है कि वस्तुओं एवं विचारों का साकारात्मक एवं नाकारात्मक भाव होते है उसे मूल्य कहा जाता है।

विद्वानों के उपरोक्त विचारों पर ध्यान देने से यह स्पष्ट होता है कि मूल्य एवं मनोवृत्ति में कुछ समानताएँ देखने को मिलती है जो निम्नलिखित है

(1) व्यक्ति के व्यवहारों पर मनोवृत्ति एवं मूल्य दोनो का प्रभाव पड़ता है।

(2) मनोवृत्ति एवं मूल्य दोनो अर्जित गुण होते है।

(3) मनोवृत्ति एवं मूल्य दोनो में भावात्मक पक्ष की प्रधानता होती है।

मूल्य और मनोवृत्ति में अन्तर

मूल्य और मनोवृत्ति ~~के~~ के बीच के उपरोक्त समानताओं के साथ-साथ

इनके बीच कुछ मुख्य अन्तर भी देखने को मिलते है जिनमें कुछ निम्नलिखित मुख्य है।

① मनोवृत्ति की अपेक्षा मूल्य मे भावात्मक पक्ष ज्यादा प्रधान एवं प्रभावशाली होते है।

② मनोवृत्ति कम स्थिर होता है और भाव ज्यादा स्थिर होता है। यहि कारण है कि विश्वास मे परिवर्तन लाना ज्यादा कठिन है अतः मूल्य ज्यादा स्थिर होता है और मनोवृत्ति कम स्थिर होता है।

③ मनोवृत्ति के निर्माण मे मूल्यो का निश्चित रूप से प्रभाव पडता है। लेकिन मूल्यों के निर्माण एवं विकास मे मनोवृत्ति का पडता है।

④ मनोवृत्ति के दो प्रकार होते है सकारात्मक एवं नकारात्मक। लेकिन मूल्यो के अनेको प्रकार होते है जैसे राजनैतिक- सामाजिक आर्थिक इत्यादि।

⑤ मूल्यो मे आत्मीकरण की प्रधानता होती है लेकिन मनोवृत्ति मे आत्मीकरण की प्रधानता नही है अतः मनोवृत्ति एवं मूल्य मे आत्मीकरण ~~के~~ ~~का~~ की प्रधानता का भी अन्तर पाया जाता है

(2) मुद्रा का मूल्यह्रास एक प्रकार से हमें ऋण लेने उपभोक्ताओं के लिए है वहीं को ठीक इसी विपरित मामलों में यही मूल्यह्रास विपरीत प्रकार से उपभोक्ता हित में होता है।

अतः मुद्रा एवं मनोवृत्ति से सम्बन्धित उपरोक्त वर्णित मामलों एवं समस्याओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मनोवृत्ति एवं मुद्रा एक आधार के साथ-साथ ~~मुद्रा~~ प्रत्येक ~~अक्सर~~ समस्याओं को पार किया जाती है।